# गिद्धों का संरक्षण


प्रो. ( डॉ. ) एस. सी. गोस्वामी
डॉ. मोहन लाल चौधरी
डॉ. अरूण कुमार झीरवाल

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

## पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

भारत में गिद्धों की 9 प्रजातियां पाई जाती हैं । भारत के तीन अतिसामान्य Gyps गिद्धों की आबादी में पिछले एक दशक के दौरान 97% से अधिक की गिरावट आई है। सभी तीन प्रभावित प्रजातियां भारतीय सफेद पीठ वाले गिद्ध, लंबे चोच वाले गिद्ध और पतले चोंच वाले गिद्ध (Gyps bengalensis, Gyps indicus और Gyps tenuirostri) एक समय भारत में अति सामान्य थे। गिद्धों की प्रकृति सबसे कुशल मैला ढोने वालों की रही है। अध्ययन में बताया गया कि गिद्धों के खत्म होने से मृत पशुओं की सफाई, बीजों का प्रकीर्णन और परागण भी काफी हद तक प्रभावित हुआ।

1. **कुल (Family) :-** Aceipitridae विश्व में गिद्ध की 20 प्रजातियॉ पाई जाती है, भारतीय उपमहाद्वीपों में 9 प्रजातियॉ पाई जाती है।
2. **स्थानीय नाम :-** गिद्ध, (चील) 7 प्रजातियॉ जोडबीड, बीकानेर में देखी गई है।
3. **वैज्ञानिक नाम :-** Gyps indicus
4. **शारीरिक रचना :-**

लंबाई : 98 – 120 cm
चौडाई : (2.5 – 3.1) (पंख फैलाव सहित)
वजन : 7–14 किग्रा
आयु : 15–20 वर्ष
रंग : काला–भूरा या सलेटी रंग

5. **पहचान :-** काला – भूरा या सलेटी रंग, पतला गंजा सिर, लम्बी सफेद गर्दन, पूंछ के पास का हिस्सा सफेद, पंखों के नीचे सफेद पट्टी, काली चोंच

6. **आवास :-** बडे वृक्ष, गावों के आस–पास, बडी–बडी चट्टानों की दरार में मुख्यतया ये अपना आवास बताते है।
7. **भोजन :-** ये प्राकृतिक सफाई कर्मी है। जो सडे–गले हुए जानवरों को खाते है।

8. **पर्यावरण में भूमिका :-** ये प्रकृति के मेहतर है जो सडे–गले जानवरों को खाते है इनका जठर रस ज्यादा अम्लीय होता है जो खतरनाक बीमारियों के कीटाणु जैसे, एन्थ्रेकस, हैजा को नष्ट कर देते है। तथा उन्हें पर्यावरण में फैलने से रोकते है। ये प्रकृति के पारिस्थिकी तंत्र को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते है। भारत भर में गिद्धों की जनसंख्या में नाटकीय गिरावट से सभी प्रकार के खतरे पारिस्थितिकी और मानव स्वास्थ्य दोनों के लिए मौजूद हैं। ऐसे महत्वपूर्ण मैला ढोने वालों का अभाव लगभग निश्चित रूप से अन्य सफाई करने वाली प्रजातियों की संख्या और वितरण को प्रभावित करता है, उदाहरण के लिए गिद्धों की कमी से जंगली कुत्तों की आबादी में बड़े पैमाने पर वृद्धि हुई है, यह मानव और वन्यजीवों से संबंधित बहुत से रोग के लिए जोखिम भरा हो सकता है, जैसे कि रैबीज।

9. **विशेषताएँ :-**

गिद्धों में प्रकृति अनुकूलन गुण पाए जाते है। तेज नजर, ऊँची उड़ान उड़ने वाला पक्षी, इनके रक्त में एक विशेष प्रकार का हिमोग्लोबिन पाया जाता है। जिसके कारण ये अधिक उँचाई पर उडते है। इनका जठर रस बहुत अम्लीय होता है। जो गम्भीर बीमारियों के कीटाणुओं जैसे, हैजा, एन्थ्रेकस को जठर रस द्वारा नष्ट कर देता है। ये प्रवासी पक्षी है जो सर्दियों में (Oct-March)प्रजनन के लिए प्रवास करते है।

## 10. गिद्धों की संख्या कम होने के कारण :-

- मानव हस्तक्षेप (पर्यावरण में पारिस्थितिकी तंत्र में रूपान्तरण)
- मृत पशुओं में डाइक्लोफिनेक दवाई का सांद्रीकरण
- भोजन की अनुपलब्धता,
- भोजन के लिए श्वान के साथ स्पर्धा
- प्राकृतिक आवास का कम होना, पेडों का काटना
- प्रजनन स्थल की असुरक्षा

## 11. संरक्षण के उपाय :-

- प्राकृतिक आवासों का संरक्षण
- प्रजनन स्थल की सुरक्षा
- श्वानो से सुरक्षा
- प्राकृतिक आवासों से विद्युत तारो को हटाना
- बडे–बडे पेडों का संरक्षण जहाँ जिनका प्रजनन स्थान है।
- पशुओं में डाइक्लोफिनेक दवाई का पूर्णतया प्रतिबन्ध


### –: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

**प्रो. ( डॉ. ) कर्नल ए. के. गहलोत**
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

**प्रो. ( डॉ. ) बी. के. बेनीवाल**
अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर



### –:: सम्पर्क सूत्र ::-

**प्रो. ( डॉ. ) एस. सी. गोस्वामी**
विभागाध्यक्ष
पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

**डॉ. अरूण कुमार झीरवाल**
सहायक अन्वेषक
( 9461300587 )

**डॉ. मोहन लाल चौधरी**
सहायक अन्वेषक
( 9414603842 )



मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर मो. : 9784105819